SET B

CBSE X	**MT EDUCARE LTD.**	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - A**	
	SEMI PRELIM - II	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

खण्ड: 'क'

A.1.

(क) चातक-पुत्र की यह दशा थी कि वह प्यास से बेहाल हो रहा था । उसकी इस दशा का कारण भयंकर गर्मी पड़ना और वर्षा का न होना था । **2**

(ख) चातक-पुत्र ने अपने पिता से यह कहा कि उसके प्राण चोंच तक आ गए हैं, उसे पानी की जरूरत है । उसके पिता ने उसे कुछ समय तक और धैर्य रखने के लिए कहा । **2**

(ग) चातक-पुत्र ने बादलों की प्रतीक्षा न करके कहीं से भी जलग्रहण करके अपनी प्यास बुझाने का निश्चय प्रकट किया । **2**

(घ) शीर्षक - कोटर और कुटीर । **1**

(ङ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कष्ट उठाकर भी अपने व्रत का पालन करना चाहिए । व्रत पालन का सुफल अवश्य मिलता है । **1**

A.2.

(क) हे धर्मराज ! अगर अपने अधिकार माँगने से न मिलें और उन्हें पाने के लिए संघर्ष किया जाए तो उसे पाप कहा जाए । ऐसी स्थिति में शोषित लोग कहाँ जाएँ ? वे जीवित कैसे रहें ? क्या वे मर जाएँ ? **2**

(ख) तेजस्वी लोगों की पहचान यह है कि वे अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करते हैं । वे या तो अपने हक छीनकर ले लेते हैं या लड़ते-लड़ते मर जाते है । **2**

(ग) जो युद्ध न्यायपूर्ण अधिकारों को पाने के लिए किया जाता है, वह निष्पाप होता है । **1**

(घ) शांति के लिए आवश्यक है - सुख के साधनों की समानता । **1**

(ङ) न्यायोचित संघर्ष उचित है । **1**

खण्ड: 'ख'

A.3.

(क) उसे जूते खरीदने थे, इसलिए वह बाजार गया । **1**

(ख) मुझे वहाँ जाना था इसलिए सवेरे उठना पड़ा । **1**

(ग) संयुक्त वाक्य । **1**

A.4.

(क) हम जोर से नहीं बोल सकते । **1**

(ख)	रमा द्वारा अपशब्द नहीं बोला जाता ।	**1**
(ग)	बच्चों से मैदान में खेला जा रहा है ।	**1**
(घ)	बीमारी के बाद दादी से चला भी नहीं जाता ।	**1**
A.5.		
(क)	योग्य – विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'पिता' विशेष्य ।	
	संतान – संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग एकवचन ।	**1**
(ख)	घर में – संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण ।	
(ग)	घंटी – संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग ।	**1**
	कोई – अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग एकवचन ।	**1**
(छ)	सौंदर्य – भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, ताजमहल (विशेष्य) ।	
	होता है – अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, एकवचन, पुल्लिंग ।	**1**
A.6.		
(क)	श्रृंगार सर्वव्यापी है । यह संसार के प्रत्येक प्राणी में व्याप्त है । बच्चों से लेकर तरुण - तरुणियों तक और बूढ़े - बूढ़ियों तक इसका व्याप है । इस रस के रूप इतने विविध हैं कि सभी संचार भाव इसमें संचरित होते रहतें हैं । तीसरे, इसमें अद्‌भुत तल्लीनता होती है । यह हृदय को मुक्त करने में सर्वाधिक समर्थ है ।	
(ख)	उत्साह ।	
(ग)	ये संख्या में ३३ हैं । ये मनोभाव स्थायी न होकर चंचल होते हैं तथा बुलबुलों की तरह	**1**
	उठते - गिरते हैं । ये स्थायी भावों का सहयोग करने के लिए उनके साथ क्रिया करते हैं ।	**1**
	सब भावों के साथ संचरित करने के कारण इन्हें संचारी या व्यभिचारी कहा जाता है ।	
(घ)	शांत रस	
	सुत बनितादि जानि स्वारथ रत न करु नेह सबही ते ।	**1**
	अंतहिं तोहि तजेंगे पामर! तूँ न तजै अबही ते ।	**1**
	अब नाथहिं अनुराग जागु जड़, त्यागु दुरासा जीते ।	
	बुझै न काम, अगिनि 'तुलसी' कहुँ विषय भोग बहु घी ते ।	
	खण्ड: 'ग'	
A.7.		
(क)	आकाश में खिले तारों को 'मोती भरा थाल' कहा गया है । जो लोग पेट भरा और तन ढँका होने पर भी तारों के रहस्य को जानने को उत्सुक रहते हैं, उन्हें मनीषी कहा गया है । उन्हें वास्तविक संस्कृत मनुष्य भी कहा गया है ।	**2**
(ख)	जिस व्यक्ति की शारीरिक आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं । अर्थात् जिसे पेट-भर रोटी और तन ढँकने को कपड़ा मिल जाता है । वह फिर भी निठल्ला नहीं बैठता । वह और-और नई	

	बातों को जानना चाहता है, नए रहस्य खोजना चाहता है, नए आविष्कार करना चाहता है, तब वह संस्कृत व्यक्ति कहलाता है ।	**2**
(ग)	मनुष्य गर्मी और सर्दी से बचने के लिए तन ढँकना चाहता होगा । उसकी इसी इच्छा से सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा ।	**1**
A.8.		
(क)	आग की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति करती है । वह भोजन पकाने के काम आती है । अतः आदि मनुष्य ने इसे सबसे महत्वपूर्ण खोज माना । आज भी इसका महत्व सर्वोपरि है । तभी तो हर सांस्कृतिक कार्यक्रम से पहले दिया जलाया जाता है और खेलों में मशाल जलाई जाती है । आज यदि आग न हो तो पूरी सभ्यता ताश के महल की भाँति भरभरा कर गिर जाएगी । आग की खोज के पीछे भोजन की प्रेरणा तो रही ही होगी, साथ ही प्रकाश और गर्मी पाने की प्रेरणा भी रही होगी । रात में आग बहुत काम आई होगी । सर्दियों में तो यह अमृत-जैसी सिद्ध हुई होगी । घनघोर ठंडी काली रात में जब आदिमानव आग से गर्मी लेता होगा, काली रात में देख पाया होगा और माँस को भूनकर खा पाया होगा तो उसे कितना आनंद मिला होगा । अतः उसने अग्नि को देवता माना होगा और उसे सुरक्षित रखने के उपाय खोजे होंगे ।	**2**
(ख)	सुषिर-वाद्यों का अभिप्राय है - सुराख वाले वाद्य, जिन्हें फूँक मारकर बजाया जाता है । ऐसे सभी छिद्र वाले वाद्यों में शहनाई सबसे अधिक मोहक और सुरीली होती है । इसलिए उसे 'शाहे-नय' अर्थात् 'ऐसे सुषिर वाद्यों का शाह' कहा गया ।	**2**
(ग)	पुराने समय में स्त्रियों के प्राकृत भाषा में बोलने के प्रमाण मिलते हैं । परंतु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि प्राकृत भाषा अनपढों की भाषा थी । वास्तव में प्राकृत अपने समय की बोलचाल की प्रचलित भाषा थी । जिस प्रकार आज हिंदी, बांग्ला आदि प्राकृत भाषाएँ हैं । अतः प्राकृत भाषा में बोलने के कारण महिलाओं को अनपढ़ कहने की भूल नहीं की जा सकती ।	**2**
(घ)	हुआ यूँ कि लेखिका के आंदोलनकारी व्यवहार से तंग आकर उनके कॉलेज की प्रिंसिपल ने लेखिका के पिता को बुलवाया । पिता पहले-से लेखिका के विद्रोही रूख से परेशान रहते थे ११। उन्हें लगा कि जरूर इस लड़की ने कोई अपमानजनक काम किया होगा । इस कारण उन्हें सिर झुकाना पड़ेगा। इसलिए वे बड़बड़ाते हुए कॉलेज गए । कॉलेज में जाकर उन्हें पता चला कि उनकी लड़की तो सब लड़कियों की चहेती नेत्री है । सारा कॉलेज उसके इशारों पर चलता है । लड़कियाँ प्रिंसिपल की बात भी नहीं मानतीं, केवल उसी के संकेत पर चलती हैं । इसलिए प्रिंसिपल के लिए कॉलेज चलाना कठिन हो	

	गया है । यह सुनकर पिता का सीना गर्व से फूल उठा । वे गद्‌गद् हो गए । उन्होंने प्राचार्य को उत्तर दिया- 'ये आंदोलन तो वक्त की पुकार हैं ... इन्हें कैसे रोका जा सकता है ।' लेखिका पिता के मुख से ऐसी प्रशंसा सुनकर विश्वास न कर पाई । उसे अपने कानों पर भरोसा न हुआ । उसे तो यही आशा थी कि उसके पिता उसे डाँटेंगे, धमकाएँगे तथा उसका घर से निकलना बंद कर देंगे ।	**2**
A.9.		
(क)	कवि को बच्चे की मुसकान तब बहुत सुंदर प्रतीत होती है, जब वह कनखी मारकर और आँखें चुराकर कवि को देखता है ।	**2**
(ख)	कवि काफी समय से घर से बाहर रहता है । इस कारण वह स्वयं को प्रवासी अर्थात् परदेसी कहता है । इस कारण वह बच्चे के लिए 'इतर' अर्थात् 'परिवार से बाहर का' सदस्य हो गया है । बच्चा उसे अपने परिवार का अंग नहीं मानता । आज उसकी दशा अपने ही घर में आए अतिथि जैसी हो गई है क्योंकि उसे फिर-से बाहर जाना है ।	**2**
(ग)	इसका आशय है - ऐसे नन्हे बच्चे की निश्छल मुस्कान, जिसके दाँत अभी निकल रहे हैं ।	**1**
A.10.		
(क)	'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है : १. बादल मानव - जीवन में क्रांति लाने की ओर संकेत करता है । २. मानव - जीवन की पीड़ाओं को दूर करने की ओर संकेत करता है । ३. जीवन को उत्साह ओर संघर्ष के लिए प्रेरित करता है । ४. जीवन में नवीनता और परिवर्तन लाने की ओर संकेत करता है ।	**2**
(ख)	कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबो के माध्यम से व्यक्त किया है – १. बच्चे की मुसकान से मृतक में भी जान आ जाती है । २. यों लगता है मानो झोपड़ी में कमल के फूल खिले हों । ३. यों लगता है मानो चट्टानें पिघलकर जलधारा बन गई हों । ४. यों लगता है मानो बबूल से शेफालिका के फूल झरने लगे हों ।	**2**
(ग)	गर्मी की चिलचिलाती धूप में दूर सड़क पर पानी की चमक दिखाई देती है । हम वहाँ जाकर देखते हैं तो कुछ नहीं होता । प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है । इस कविता में इसका अर्थ छलावे और भ्रम के लिए किया गया है । कवि कहना चाहता है कि लोग प्रभुता अर्थात बड़प्पन में सुख मानते हैं । किंतु बड़े होकर भी कोई सुख नहीं मिलता । अतः बड़प्पन का सुख दूर से ही दिखाई देता है । यह वास्तविक सच नहीं है ।	**2**

(घ) माँ अपने सुख-दुख को, विशेषकर नारी-जीवन के दुखों को अपनी माँ, बहन या बेटी के साथ बाँट सकती है । शादी से पहले माँ और बहनें उसकी पूँजी थीं । वह उनके साथ बातें कर सकती थी, सलाह ले-दे सकती थी । परंतु अब उसके पास बेटी ही एक मात्र पूँजी है । कन्यादान के बाद वह भी ससुराल चली जाएगी तो वह बिल्कुल अकेली रह जाएगी । **2**

A.11. हमारी आजादी की लड़ाई में समाज के सभी वर्गो ने अपना भरपूर योगदान दिया । इसमें उच्च और मध्यम वर्ग तो शामिल था ही, साथ ही वह वर्ग भी शामिल था जिसे उपेक्षित वर्ग माना जाता है । सामान्यतः इस वर्ग की ओर लोगों की दृष्टि नहीं जाती ।

इस कहानी में 'टुन्नू' पात्र के माध्यम से ऐसे ही उपेक्षित वर्ग के योगदान को रेखांकित किया गया है । 'टुन्नू' व्यक्तिगत पात्र न होकर वर्गगत पात्र है । वह उपेक्षित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । इस वर्ग ने भी ब्रिटिश पुलिस की यातनाओं को झेला तथा अपने प्राणों का बलिदान तक दे दिया ।

टुन्नू और दुलारी दोनों ऐसे पात्र हैं जो समाज से उपेक्षित हैं । उन्हें मात्र मनोरंजन का साधन माना जाता है । दुलारी भी टुन्नू की हत्या पर भावुक हो उठती है अर्थात् उसकी सहानुभूति देश पर बलिदान होने वालों के प्रति है । **4**

अथवा

लेखक अपनी जापान-यात्रा के अवसर पर हिरोशिमा भी गया । यहाँ विश्वयुद्ध में अणु बम बरसाए गए थे । रेडियम-पदार्थ से आहत लोगोंने लंबे समय तक कष्ट भोगा। लेखक उनसे मिला भी। इस प्रकार उसे प्रत्यक्ष अनुभव पर्याप्त नहीं है, अनुभूति होनी आवश्यक है । वह गहरी चीज होती है। वह अनुभूति ही होती है जो संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात कर लेती है जो लेखक के साथ वास्तव में घटित नहीं हुआ होता ।

लेखक ने एक दिन हिरोशिमा में एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया को देखा । विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा । रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणों ने पत्थर को झुलसा दिया, व्यक्ति को भाप बनाकर उड़ा दिया । इस प्रकार समस्त ट्रेजडी जैसे पत्थर पर लिखी हो । उस छाया को देखकर लेखक को एक थप्पड़ सा लगा । इतिहास जैसे उसके भीतर जलते हुए सूर्य- सा उग आया था । उस क्षण लेखक स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया था । **4**

खण्ड: 'घ'

A.12.

(क) **विज्ञान : एक वरदान** – आर्केडियन फरार लिखते हैं - ''विज्ञान ने अंधों को आँखें दी हैं और बहरों को सुनने को शक्ति । उसने जीवन को दीर्घ बना दिया है, भय को कम कर दिया है । उसने पागलपन को वश में कर लिया है और रोग को रौंद डाला है ।''
यह उक्ति सत्य है । विज्ञान की सहायता से असाध्य रोगों के इलाज ढूँढ़ लिए गए हैं । कई बीमारियों को समूल नष्ट कर दिया गया है ।

रसोई - घर से लेकर मुर्दाघर तक सब जगह विज्ञान ने वरदान ही वरदान बाँटे हैं । विज्ञान की सहायता से पूरी दुनिया एक परिवार बन गई है । जब चाहे, तब मनुष्य अपने प्रियजनों से बात कर सकता है । घंटे भर में दुनिया का चक्कर लगा सकता है । सेकेंडों में दुनिया - भर को कोई संदेश दिया जा सकता है ।

विज्ञान ने दूरदर्शन, रेडियो, वीडियो, आडियो चलचित्र आदि के द्वारा मनुष्य के नीरस जीवन को सरस बना दिया है । चौबीसों घंटे चलने वाले कार्यक्रम, नए - नए सुंदर सुस्वादु व्यंजन, सुखदायक रंगीन वस्त्र, सौंदर्य - वर्द्धक साधन विज्ञान को ही देन हैं ।

विज्ञान : एक अभिशाप – विज्ञान का सबसे बड़ा खतरा है - पर्यावरण - प्रदूषण इसके कारण आज शहरों में साँस लेना दूभर हो गया है । हर जगह शोर, गंदगी और बीमारियों का साम्राज्य - सा फैल गया है । कृत्रिम खादी, दवाइयों के कारण भूमि से उत्पन्न अन्न - फल तक दूषित हो गए हैं ।

विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने खतरनाक बम बना लिए हैं । इससे अनेक बार विषैली गैसें तथा रेडियोधर्मी किरणें विकीर्ण हो चुकी हैं । भोपाल गैस कांड और ओजोन गैस की परत का फटना इसके ज्वलंत उदाहरण हैं । यातायात की तेज गति के कारण भी मौतें होने लगी हैं । लोगों के शरीर पंगु होने लगे हैं । ये सब जीवन पर अभिशाप हैं ।

अमानवीयता – आज वैज्ञानिक मानव स्वार्थी, छली, चालाक, कृत्रिम और विलासी हो गया है । दया, मानवता, श्रध्दा, आदर, कोमलता जैसे मानवीय गुणों से उसका नाता टूट गया है । ये बातें मनुष्य के लिए अशुभ हैं । विज्ञान ने मनुष्य को बेरोजगार बना दिया है । सैकड़ों आदमियों का काम करने वाली मशीनों ने कारीगरों के हाथ बेकार कर दिए हैं ।

निष्कर्ष – सच बात यह है कि विज्ञान के सदुपयोग या दुरुपयोग को ही वरदान या अभिशाप कहते हैं । विज्ञान का संतुलित उपयोग जीवनदायी है । उसका अंधाधुंध दुरुपयोग विनाशकारी है । **10**

(ख) **मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति :** मन - मानव की सबसे बड़ी शक्ति 'मन' है । मनुष्य के पास मन है, इसलिए वह मनुष्य है, मनुज है, मानव है । मानसिक बल पर ही मनुष्य ने आज तक की यह सभ्यता विकसित की है । मन मनुष्य को सदा किसी - न - किसी कर्म में रत रखता है ।

मन के दो पक्ष : आशा - निराशा - धूप - छाँव के समान मानव - मन के दो रूप हैं - आशा - निराशा । मन में शक्ति, तेज और उत्साह ठाठें मारता है तो आशा का जन्म होता है । इसी के बल पर मनुष्य हजारों विपत्तियों में भी हँसता - मुसकराता रहता है ।

निराश मन वाला व्यक्ति सारे साधनों से युक्त होता हुआ भी युद्ध हार बैठता है । पांडव जंगलों की भूल फाँकते हुए भी जीते और कौरव राजसी शक्ति के होते हुए भी हारे । अतः जीवन में विजयी होना है तो मन को शक्तिशाली बनाओ ।

मन की विजय का अर्थ - मन की विजय का तात्पर्य है - काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे शत्रुओं पर विषय । जो व्यक्ति इनके वश में नहीं होता, बल्कि इन्हें वश में रखता है, वह पूरे विश्व पर शासन कर सकता है । स्वामी शंकराचार्य लिखते हैं - ''जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया ।''

मन पर विजय पाने का मार्ग - गीता में मन पर नियंत्रण करने के दो उपाय बताए गए हैं - अभ्यास और वैराग्य । यदि व्यक्ति रोज - रोज त्याग या मोह - मुक्ति का अभ्यास करता रहे तो उसके जीवन में असीम बल आ सकता है ।

मानसिक विजय ही वास्तविक विजय - भारतवर्ष ने विश्व को अपने मानसिक बल से जीता है,सैन्य बल से नहीं । यही सच्ची विजय भी है । भारत में आक्रमणकारी शताब्दियों तक लड़ - जीत कर भी भारत को अपना न बना सके, क्योंकि उनके पास नैतिक बल नहीं था । शरीर - बल से हारा शत्रु फिर - फिर आक्रमण करने आता है मानसिक बल से परास्त हुआ शत्रु स्वयं इच्छा से चरणों में लोटता है । इसीलिए हम प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं -

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें ।
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें ॥ **10**

(ग) **संसार में आज जो भी ज्ञान - विज्ञान की उन्नति और विकास है, उसका कारण है परिश्रम** - मनुष्य

परिश्रम के सहारे ही जंगली अवस्था से वर्तमान विकसित अवस्था तक पहुँचा है । उसने श्रम से खेती की । अन्न उपजाया । वस्त्र बनाए । घर, मकान, भवन, बाँध, पुल, सड़कें बनाईं । पहाड़ों की छाती चीरकर सड़कें बनाने, समुद्र के भीतर सुरंगें खोदने, धरती के गर्भ से खनिज - तेल निकालने, आकाश की ऊँचाइयों में उड़ने में मनुष्य ने बहुत परिश्रम किया है ।

परिश्रम करने में बुद्धि और विवेक आवश्कत - परिश्रम केवल शरीर की क्रियाओं का ही नाम नहीं है । मन तथा बुद्धि से किया गया कार्य भी परिश्रम कहलाता है । एक निर्देशक, लेखक, विचारक, वैज्ञानिक केवल विचारों, सलाहों और युक्तियों को खोजकर नवीन आविष्कार करता है । उसका यह बौद्धिक श्रम भी परिश्रम कहलाता है ।

परिश्रम से मिलने वाले लाभ - परिश्रम का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता मिलती है । दूसरे, परिश्रम करने वाला मनुष्य सदा सुखी रहता है । उसे मन - ही - मन प्रसन्नता रहती है कि उसने जो भी भोगा, उसके बदले उसने कुछ कर्म भी किया । महात्मा गाँधी का यह विश्वास था कि ''जो अपने हिस्से का काम किए बिना ही भोजन पाते हैं, वे चोर हैं ।''

परिश्रमी व्यक्ति का जीवन स्वाभिमान से पूर्ण होता है, जबकि ऐय्याश दूसरों पर निर्भर तथा परजीवी होता है । परिश्रमी स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है । उसमें आत्म - विश्वास होता है जबकि विलासी जन सदा भाग्य के भरोसे जीते हैं तथा दूसरों का मुँह ताकते हैं ।

उपसंहार - वेदवाणी में कहा गया है - ''बैठने वाले का भाग्य भी बैठ जाता है और खड़े होने वाले का भाग्य भी खड़ा हो जाता है । इसी प्रकार सोने वाले का भाग्य भी सो जाता है और पुरुषार्थी का भाग्य भी गतिशील हो जाता है । चले चलो, चले चलो ।'' इसीलिए स्वामी विवेकानंद ने सोई भारतीय जनता को कहा था -'उठो, जागो और लक्ष्य - प्राप्ति तक मत रुको ।'' **10**

A.13.

सेवा में
संपादक
हिंदुस्तान
नई दिल्ली
महोदय,
कृपया मेरे निम्नलिखित विचार 'पाठकों के पत्र' नामक स्तंभ में प्रकाशित कर अनुगृहीत करें -

भारत का लोकतंत्र अभी परिपक्व नहीं हुआ है। भारत के राजनीतिक दल चुनावों के नाम पर मनमानी अनुशासनहीनता करते हैं। उनके कार्यकर्ता जहाँ चाहे पोस्टर चिपका देते है और नारे लिख देते हैं। जिस विज्ञापन पर हजारों रूपये खर्च किए जाते है, उन्हें चुनावी कार्यकता बड़ी बेदर्दी से ढँक देते है। उन्हें जहाँ भी जगह मिले, वे नारे लिख देते हैं। इस बारे में चुनाव आयोग को कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए ।

जिन नागरिकों की दीवारें या पट गंदे हुए हों, उन्हें उचित हर्जाना मिलना चाहिए। वह हर्जाना दोषी दलों से वसूल किया जाना चाहिए।

भवदीय
सान्या सहरावत
हिंसार
१५ मार्च, २०१६

5

अथवा

परीक्षा भवन
अ.ब.स. केंद्र
मार्च 15, 2016
प्रिय अनन्य,

प्रेम!

कैसे हो ? आशा है, हमेशा की तरह सदाबहार होगे ।

मैं तुम्हारी ओर से जन्मदिन का अति सुंदर उपहार पाकर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मुझे सुबह सैर के लिए तो कभी तैयार नहीं कर सके । अब यह युक्ति अच्छी है। तुमने मेरे लिए इतना सुंदर ट्रेक- सूट भेजा है कि मेरा मन सुबह सैर करने के लिए मचलने लगा है। पर तुम यह न समझना कि मैं तुम्हारी सलाह मान गया हूँ। मैं तो लोगों को यह इतना सुंदर ट्रेक-सूट दिखलाने के लिए हफ्ता-दो- हफ्ता सैर पर जाऊँगा। जब कोई पूछेगा कि कहाँ से लाए हो तो तुम्हें याद करूँगा। भाई अनन्य! मैंने सूट पहनकर देखा है। लगता है, यह मेरे लिए ही बना है। तुम्हारा चयन बहुत सुंदर है। मेरी ओर से बहुत- बहुत धन्यवाद !

भगवान तुम्हें ऐसे-ऐसे बढ़िया उपहार देते रहने की बुद्धि दे ।

तुम्हारा
अमय कुमार

5

A.14.

(क)

बिल्डर्सनयन बिल्डर्स
एल.बी.एस. रोड, मुलुंड
मुंबई

प्रस्तुत करता है
मकानहीन नौकरीशुदा लोगों के लिए

अपना मकान

- दो बेडरूम, हॉल, रसोई वाला सेट (5000 रु. प्रतिमास 20 वर्षों तक)
- तीन बेडरूम, हॉल, रसोई वाला सेट (6000 रु. प्रतिमास 22 वर्षों तक)
- चार बेडरूम, हॉल, रसोई वाला सेट (8000 रु. प्रतिमास 20 वर्षों तक)

25% राशि बुकिंग के समय जमा करानी होगी ।

सुनहरा अवसर! **जल्दी कीजिए!**

संपर्क : प्रकाश बिल्डर्स, रोहित गुप्ता 0987654321, संजय दलाल 0123456781 **5**

अथवा

स्वस्थ रहिए!

सुडौल बनिए!

शक्ति जिम

मज़बूत बनिए!

- आपके लिए लाया है
- नवीनतम उपकरण!
- आधुनिकतम तकनीक!!
- कुशलतम प्रशिक्षक!!!

मात्र 300 रु. मासिक देकर कुशल प्रशिक्षकों की देखरेख में प्रतिदिन प्रतिघंटा व्यायाम कीजिए और शरीर को बनाइए सुदृढ़, सुडौल और सुंदर!

संपर्कः शक्ति जिम, 234, बड़ा बाज़ार, दिल्ली । **मोबाइल** : 01234567897 **5**

❖❖❖❖❖